Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

हिमाचल प्रदेश के ताल वाद्यों की उत्पति, उपयोगिता और महत्त्व

Anil Kumar[1], Dr. Rajeev Sharma[2]

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla
Assistant Profesoor, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

संगीत ललित कलाओं में सर्वोच्च है क्योंकि संगीत के द्वारा ही मनुष्य को मानसिक शान्ति की अनुभूति होती है। गायन, वादन, नृत्य जब एकत्रित होते हैं, तो संगीत का निर्माण होता है। गायन, वादन, नृत्य तीनों का समान महत्त्व है। यदि तीनों में से एक विधा भी अलग हो जाए तो हम इसे संगीत की संज्ञा नहीं दे सकते। संगीत का आरम्भ प्राचीन समय से होता आ रहा है। सामवेद में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। गायन शैलियों की बात करें तो लोक संगीत भी आम जनमानस से सम्बन्धित होता है। लोक संगीत का लोगों से घनिष्ट सम्बन्ध होता है। जिस प्रकार गायन शैलियों का महत्त्व है उसी प्रकार ताल और ताल वाद्यों का। बिना ताल वाद्यों के कोई भी संगीत पूर्ण नहीं होता विश्व के कण–कण में संगीत व्यापत है। संगीत का कोर्अ भी क्षेत्र हो, कोई भी विधा हो, ताल वाद्यों द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है। ताल वाद्यों के प्रयोग से हम अनेक अनुभवों से परिचत होते हैं।

बीज शब्दः ताल वाद्य, उपयोगिता और महत्त्व

भूमिका

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि भी कहा जाता है क्योंकि यहां अनेक देवी–देवताओं का वास है और यहाँ देव परम्पराओं का अत्यधिक महत्त्व है। प्रदेश की संस्कृति का निर्माण संगीत गायन, वादन, नृत्य लोक साहित्य, लोक नाट्य के द्वारा ही संभव है। सर्वप्रथम संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए प्रदेश का लोक संगीत, लोक वाद्यों का वादन तथा लोक नृत्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लोक गीत, लोक के गीत अर्थात् 'लोगों के गीत'। लोक गीत केवल एक व्यक्ति नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज अपनाता है। प्रदेश में जो संगीत प्रयोग में लाया जाता है। उसे लोक संगीत ही कहा जाता है।

लोक संगीत का सीधा सम्बन्ध आम जनमानस से होता है। लोकगीत लोक साहित्य में वर्णित होते है। इनके विषय भी आम लोगों से ही सम्बन्धित होते है। हिमाचल में मुख्य रूप से नाटी, गिद्दा, झमाकड़ा, नवाला लोक गीतों को गाया जाता है। लोक संगीत आम जनमानस का अभिन्न हिस्सा है। देवभूमि में तत्, सुषिर, घन तथा अवनद्ध वाद्यों का वादन भी किया जाता है। ये सारे ही लोक वाद्य हैं। हिमाचल प्रदेश में अनेक प्रकार के लोक नृत्य प्रचलित है जो किसी न किसी ज़िले से सम्बन्धित होते है। तो यह कहा जा सकता है कि संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए संगीत का सर्वोच्च स्थान है। कला और संस्कृति से ही प्रदेश की पहचान होती है।

हिमाचल प्रदेश के ताल वाद्यों की उत्पत्ति

जितनी प्राचीन मानव सभ्यता है संगीत भी उतना ही प्राचीन है। जिस प्रकार मनुष्य का विकास हुआ साथ–साथ में संगीत भी विकसित होता गया। संगीत का उल्लेख सामवेद ग्रंथ से भी प्राप्त होता है। हिमाचल प्रदेश के ताल वाद्यों का सम्बन्ध देवी–देवताओं से है। प्रथम ताल वाद्य 'डमरू' को माना जाता है जो भगवान शंकर के हाथ में विराजमान है। यह प्रथम वाद्य के रूप में पूजनीय है। ताल वाद्यों का विकास भी समय के साथ हुआ है। चर्म से

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

मढ़े हुए वाद्यों को ताल वाद्यों की श्रेणी में माना जाता है। जितना महत्त्व गायन, वादन, नृत्य का है समान महत्त्व ताल का भी है।

यदि स्वर संगीत की आत्मा है तो ताल संगीत का प्राण है। ताल के बिना संगीत ऐसा है जैसे कि आत्मा के बिना शरीर। निबद्ध संगीत में ऐसी रचनाए होती है जो ताल में रचित होती है। अनिबद्ध संगीत ताल रहित होता है जिससे उदासीनता छा जाती है। ताल वाद्यों के बिना संगीत अधूरा है। ताल के बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गायन, वादन, नृत्य को गति के द्वारा बांधकर ताल इनमे रंजकता और सौंदर्य को प्रदर्शित करता है। प्रारम्भ से ही मानव मस्तिष्क में लय का ज्ञान था। प्राचीन समय में भूमि दुंदुभी तथा दुंदुभी वाद्यों का प्रयोग किया जाता था। ताल वाद्यों की उत्त्पति का आरम्भ इन्हीं वाद्यों से होता था। भूमि में एक गढा किया जाता था और उस पर चर्म मढ़ा जाता था उसे भूमि दुंदुभी तथा लकड़ी के खोल में चर्म मढ़ा जाता था उसे दुंदुभी वाद्य कहा जाता था। समय के साथ–साथ ताल वाद्यों का विकास होता गया। रामायण महाभात तथा अन्य कालों में वाद्यों के नए रूप देखने में प्राप्त हुए जैसे ढोल, डमरू, पखावज, नगाड़ा इत्यादि। आज ताल वाद्यों का उल्लेख अनेक ग्रंथों तथा पुस्तकों में लिखित है। पहले हाथ पर ताली देकर ताल दर्शाया जाता था और ताल की मात्राओं की गणना की जाती थी परन्तु यह संगत के लिए उचित नहीं था। इसी कारण ताल वाद्यों की उत्पति आवश्यक थी। गायन, वादन, नृत्य के साथ संगत ताल वाद्यों द्वारा ही सम्भव थी इसलिए ताल वाद्यों का निर्माण होना आवश्यक हो गया था। गायन, वादन, नृत्य के साथ तो ताल वाद्यों का प्रयोग होता ही है तथा नाटकों में भी ताल वाद्यों का महत्त्व है। बिना गति के कुछ भी संभव नहीं है न जीवन और न ही संगीत। संगत में समय नापने के साधन को ताल कहते है।

ताल वाद्यों की आवश्यकता

जिस तरह प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है उसी तरह ताल वाद्यों के बिना संगीत की कल्पना करना असम्भव है। मानव सभ्यता के पहले से ही संगीत कला का उदय हो चुका था। इसका मुख्य कारण है कि मानव ने प्राकृतिक वातावरण में केवल चार प्रकार की ध्वनि का ही श्रवण किया । उसी आधार पर चार प्रकार के ताल वाद्यों का निर्माण किया। आधुनिक समय में चार प्रकार के ताल वाद्यों का ही चलन है। ये चार प्रकार के वाद्य इस प्रकार हैः–

तत् वाद्य : जिनमें स्वरों की उत्पति तारों के कंपन से होती है जैसे– सितार, वीणा, सरोद।

सुषिर वाद्य : जिनमें स्वरों की उत्पति वायु द्वारा होती है जैसे– शहनाई, वंशी, शंख, हारमोनियम।

घन वाद्य : ये वाद्य धातु या लकड़ी द्वारा निर्मित होते हैं और अघात करके बजाए जाते हैं। यह अघात दो हिस्सों को परस्पर टकराकर या किसी वस्तु द्वारा किया जाता है जैसे करताल, मंजीरा, घंटा इत्यादि।

अवनद्ध वाद्य : ये वे वाद्य है जिनका मुख चर्म से मढ़ा होता है और हाथ या अन्य किसी वस्तु के अघात से बजाए जाते हैं। इन्हें अवनद्ध, वितत भी कहा जाता है। जैसे डमरू, मृदंग, पखावज, ढोलक आदि वाद्य हैं। इन चार प्रकार के वाद्यों में सम्पूर्ण संगीत आधारित है। देवभूमि हिमाचल में भी चार प्रकार के वाद्य प्रचलित है। ईसा से करीब एक हज़ार वर्ष पूर्व से ही मृदंग का विकास हो चुका था और मृदंग से तबला, ढोलक, खोल, नाल आदि वाद्यों का प्रयोग आधुनिक काल में किया जाता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

नृत्य कला को मनोरम बनाने के लिए वाद्यों का प्रयोग चिरकाल से होता आ रहा है। भगवान शंकर के नृत्य में जब ढोल की आवश्यकता हुई तो ब्रह्म जी ने ढोल का निर्माण किया। इस अद्भुत ढोल की तालों से भगवान का नृत्य बहुत ही प्रभावशाली बन गया था। इस प्रकार गायन, वादन, नृत्य की संगत में ताल वाद्यों ने अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया है। जिस तरह मानव सभ्यता का विकास हुआ। उसी दौरान मानव ने अवनद्ध वाद्यों को भी संचार का माध्यम बनाया। अवनद्ध वाद्य वे वाद्य होते हैं जो भीतर से पोले तथा चमड़े से मढ़े होते हैं और हाथ या अन्य वस्तु मे ताड़न से शब्द उत्पन्न करते हैं। वे अवनद्ध वाद्य कहलाते है। इन वाद्यों का मुख्य उद्देश्य ताल की उत्पति करना होता है।

इसलिए इन्हें ताल वाद्य भी कहा जाता है। कुछ संगीत विद्वानों का विचार है कि शिव डमरू से ही समस्त ताल वाद्यों की उत्पत्ति हुई है। देव भूमि हिमाचल को शिव भूमि के नाम से भी जाना जाता है। यहां शिव को ही संगीत की कला का जन्मदाता माना जाता है तथा शिव के डमरू को प्रथम वाद्य के रूप में माना जाता है। लोक संगीत में प्रयुक्त किये जाने वाले विभिन्न ताल वालों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि प्रत्येक ताल वाद्य का संगीत के क्षेत्र में कुछ न कुछ उपयोग अवश्य है।

ताल वाद्यों का मुख्य उद्देश्य संगति करना है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए ताल वाद्य का निर्माण किया गया। गायन शैलियों के अनुरूप अलग–अलग ध्वनि उत्पन्न करने वाले ताल वाद्यों की आवश्यकता हुई। यह बात अलग है कि कुछ ताल वाद्य अत्यधिक उपयोगी हुए और कुछ ताल वाद्य कुछ कम उपयोगी हुए। जैसे–नगाड़ा, ढोल, ढोलक, डमरू, ढोकली इन वाद्यों का वादन हर प्रकार के उत्सव में किया जाता है। यह अत्याधिक लोकप्रिय ताल वाद्य हैं।

संगीत में प्राणों का संचार ताल वाद्यों द्वारा किया जाता है। ताल वाद्यों की संगति ही संगीत को जीवन प्रदान करती है। इनकी संगति के अभाव में संगीत की ऐसी दशा हो जाती है जैसे प्राणों के निकलने पर शरीर की होती है। ताल वाद्यों के द्वारा संगीत में सौंदर्य की उत्पत्ति की जाती है। कला में संयम का होना अत्यधिक अनिवार्य है। कला द्वारा ही सुन्दर भावनाओं का प्रदर्शन किया जाता है। संयम ताल द्वारा ही संभव है जो अवनद्ध वाद्य ही कर सकता है। विभिन्न लयो में गाए जाने वाले गीतों में ताल द्वारा ही संभव हो सकता है। ताल के संयम द्वारा ही संगीत कला का प्रदर्शन शुरू से अन्त तक समान बना रहता है। संगीत में ताल द्वारा मुल्यांकन किया जाता है। संगीत की भाषा में कहा भी जाता है कि ''बेसुरा तो सुन सकते हैं पर बेताला'' नहीं।

जैसे कभी किसी कलाकार द्वारा स्वर नहीं लगता तो श्रोताओ के सामने उसकी गलती छिप जाती है परन्तु यदि कलाकार ताल से भटक जाए अथवा बेताला हो जाए तो कोई भी श्रोतागण माफ करने को तैयार नहीं होगा। कलाकार का मूल्यांकन ताल द्वारा ही किया जाता है। ताल वाद्यों द्वारा भाव और रस की उत्पत्ति होती है। जिस प्रकार तत वाद्य तथा सुषिर वाद्यों के द्वारा विभिन्न प्रकार के रसों कि उत्पत्ति की जाती है। उसी प्रकार अवनद्ध वाद्यों के द्वारा रसों की उत्पत्ति संभव है।

ताल वाद्यों के वादन से करूण श्रृंगार, वीर, रोद्र तथा भक्ति रसो का सृजन किया जाता जैसे श्रृंगार रस की उत्पत्ति के लिए ढोलक वाद्य का प्रयोग किया जाता है और भक्ति रस उत्पन्न करने के लिए मंजीरा करताल,

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

चिमटा आदि बजाए जाते हैं। उसी प्रकार वीर, रोद्र रस की उत्पत्ति के लिए ढोल, नगाड़ा वाद्यों का वादन किया जाता है।

अवनद्ध वाद्य

'अवनद्ध शब्द संस्कृत भाषा के ''नह'' धातु में ''क्त'' प्रत्यय तथा उससे पूर्व क्रमशः ''अव'' उपसर्ग लगाकर बना है। नह का अर्थ है बांधना या ढकना होता है। डा0 योगमाया शुक्ल के अनुसार अवनद्ध का सामान्य अर्थ बंधा और ढका होने से भारतीय संगीत में ये शब्द चर्म से बंधे ढके व मड़े हुए मुंह वाले वाद्यों के विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए''।

हिमाचल प्रदेश में प्रयुक्त होने वाले ताल वाद्य

हिमाचल प्रदेश में भी ताल वाद्यों के विभिन्न प्रकार प्राप्त होते हैं। जिनके नाम तो लगभग समान ही होते हैं परंतु आकार में अंतर हो सकता है। लोक संगीत लोक वाद्यों का वादन लोक नृत्य तथा लोक नाट्यों के साथ ताल वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। मन्दिरों तथा देवी–देवताओं के साथ ताल वाद्यों का घनिष्ट सम्बन्ध है। मन्दिरों में इन ताल वाद्यों का वादन किया जाता है। देवी–देवताओं का जब मिलन होता है उस समय भी ताल वादन किया जाता है। ताल वाद्यों के वादन पर देवी–देवता नृत्य करते हैं। इन ताल वाद्यों का वादन विशेष जाति समुदाय द्वारा किया जाता है। जिस प्रकार लोक संगीत के विभिन्न प्रकार प्रचलित है। उसी प्रकार देवभूमि में ताल वाद्यों के भी अनेक प्रकार प्रचलित हैं जैसे सर्वप्रथम डमरू, नगाड़ा और ढोल के भी अनेक प्रकार प्रचलित हैं ढोकली, गुज्जू, ढोलक तथा खंजरी मुख्य रूप से प्रचलित ताल वाद्य हैं। आम लोगो के दैनिक जीवन में इन ताल वाद्यों का गहरा सम्बन्ध होता है। क्योंकि ये सारे लोक ताल वाद्य है और लोग इनसे परिचित होते हैं। हिमाचल प्रदेश में इन लोक ताल वाद्यों के बिना संगीत अधूरा सा प्रतीत होता है। गायन, तत वादन, सुषिर वादन नृत्य तथा लोक नाट्यों में भी ताल वाद्यों के द्वारा संगत की जाती है।

देव भुमि हिमाचल के वेद शास्त्र जितने प्राचीन है उतना ही प्राचीन यहां का संगीत है। हमारे अवनद्ध वाद्य प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक प्रचलन में हैं। जिनका प्रयोग आज हिमाचल के हर क्षेत्र में होता है। सदियों से इन ताल वाद्यों का प्रयोग पारम्परिक उत्सवों, धार्मिक उत्सवों तथा सामाजिक उत्सवों में होता आ रहा है। इन वाद्यों के वादन के बिना कोई भी उत्सव सम्पन्न नहीं होता। जब ताल वाद्यों की आवश्यकता उत्पन्न हुई तो ताल वाद्यों का निर्माण होना भी शुरू हुआ। ताल वाद्य अन्दर से खोखले होते हैं और दोनो मुख पर चर्म मढ़ा जाता है। जैसे–डमरू, ढोल, ढोलक इत्यादि और कुछ ताल वाद्य अन्दर से खोखले होते हैं जिनके केवल एक मुख पर चर्म मढ़ा जाता है जैसे नगाड़ा, ताशा, तबला इत्यादि और ताल वाद्यों के तीसरे प्रकार व ताल वाद्य होते हैं जिनका एक गोल घेरा बनाया जाता है और उसमें चर्म मढ़ा जाता है जैसे ढफली, ढफला, खंजरी इत्यादि। ताल वाद्यों के ये तीन प्रकार संपूर्ण संगीत के साथ प्रयोग में लाए जाते है।

आज बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो ताल वाद्यों का निर्माण करते हैं। वे किस प्रकार ताल वाद्यों का निर्माण करते हैं। ये भी एक शोध का विषय है। पहले तो गायन शैलियों पर ही शोध किए जाते थे परन्तु आधुनिक समय में ताल, लयकारियों तथा ताल वाद्यों पर भी शोध हो रहे हैं। मेरा विद्यावाचस्पति (चैण्क) का शोध विषय भी हिमाचल के लोक ताल वाद्यों की निर्माण विधि से सम्बंधित है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

हमने ऊपरलिखित कुछ ताल वाद्यों का उल्लेख किया है। तीनो प्रकार के ताल वाद्य सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश में पाए जाते है। माना कि आज के समय में घन वाद्यों का महत्व कम हो गया है तथा सर्वप्रथम हाथ पर ताली दी जाती थी और लय को प्रदर्शित किया जाता था। घन वाद्य– लय वाद्य परन्तु आज लय वाद्यों के स्थान पर ताल वाद्यों का महत्व बढ़ता जा रहा है। ताल वाद्य–अवनद्ध वाद्य। लोक ताल वाद्य जैसे ढोलक आम लोगो के घर में आसानी से प्राप्त की जा सकती है। जिससे लोग अपना मनोरंजन भी करते हैं।

ताल वाद्यों की उपयोगिता और महत्व

देवभूमि मे लोक संगीत दो प्रकार का होता है एक अनिबद्ध और दूसरा निबद्ध। अनिबद्ध जो बिना ताल के गाया जाता है। जैसे पहले ताल वाद्य नहीं होते थे तो लोक गीतों को बिना ताल के गाया जाता था। आज भी ऐसे लोक गीत हैं जो अनिबद्ध रूप में गाए जाते हैं। जो लोक गीत ताल के साथ गाए जाते हैं तथा ताल में बंधे हुए होते हैं। ताल के द्वारा ही रसों की उत्पत्ति होती हैं। ताल से ही संगीत में सौंदर्य उत्पन्न होता है। डमरू वाद्य का प्रयोग गुग्गा–गाथा के साथ किया जाता है। ढोल, नगाड़े का वादन मन्दिरों में आरती के समय किया जाता है। पारम्परिक गीत, लोक–संगीत, लोक–नृत्य, ढोल–नगाड़े का वादन किया जाता है। ढोल–नगाड़े की नौबत शहनाई वाद्य के साथ की जाती है तथा ढोल, नगाड़े का स्वतंत्र वादन भी हिमाचल में देखने को मिलता है। हिमाचल में ढोल नगाड़े के ऐसे कलाकार हैं जो अपनी कला में पारंगत हैं। ढोल–नगाड़े की नौबत जुगलबन्दी तथा प्राचीन लोक–ताल और लयकारियों का ऐसा प्रदर्शन जो लोगो को मंत्रमुग्ध कर देता है ढोलक का प्रयोग तो गायन, वादन, नृत्य तीनों के साथ किया जाता है।

ताल वाद्यों का आज के समय में अत्यंत महत्व है। बिना ताल के संगीत उदासीन सा प्रतीत होता है। बिन लय और ताल के संगीत ऐसा होता है जैसे तालाब में स्थिर जल। गति का जीवन और संगीत में अत्यन्त महत्व है। जिस प्रकार पृथ्वी अपने ऊपर सृष्टि का भार वहन करती है उसी प्रकार अवनद्ध वाद्य गायन वादन तथा नृत्य को अपने ऊपर धारणा करते हैं। जिस प्रकार रेल चलाने के लिए पटरी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार गायन, वादन, नृत्य के लिए ताल की आवश्यकता होती है। जिसके लिए साधन अवनद्ध वाद्य होते हैं। ताल को संगीत का धरातल कहना उचित होगा। हिमाचल प्रदेश में किसी भी प्रकार का संगीत हो ताल की आवश्यकता तो पड़ती ही हैं। ताल द्वारा ही संगीत को नियंत्रित किया जा सकता है। सामाजिक और धार्मिक जीवन में भी अवनद्ध वाद्यों का अत्यंत महत्व है। देव भूमि हिमाचल में कोई भी शुभ एवं मांगलिक कार्य हो जैसे विवाह, शिशु का जन्म कोई भी कर्म हो अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक इन ताल वाद्यों की आवश्यकता होती है। देव–भूमि के मन्दिरों में बड़े–बड़े नगाड़े रखे होते हैं। जिनका वादन आरती के समय किया जाता है। ढोल और नगाड़े का वादन मन्दिरों में किया जाता है। भारतीय सेना के जोश को आगे बढ़ाने के लिए भी ताल वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। जैसे 26 जनवरी हो या गणतंत्र दिवस, ध्वजा रोहण के अवसर पर सैनिको द्वारा परेड ड्रम बीट के साथ की जाती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह हैं कि 29 जनवरी को बीटिंग रिट्रीट झण्डा समापन समारोह पर केवल अवनद्ध वाद्य ही बजाया जाता है। ताल वाद्यों के अध्ययन से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि ताल वाद्य प्राचीनकाल से लेकर प्रयोग में लाए जा रहे हैं और मानव जीवन में इनका अत्यंत महत्व है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

ताल वाद्यों का सम्बंध हिमाचल प्रदेश के हर क्षेत्र से है। अनेक प्रकार के ताल वाद्य देव–भूमि में प्राप्त किए जाते हैं। वाद्यों का उपयोग अनेक प्रकार से किया जाता है तथा ताल वाद्यों का महत्व अधिक हो जाता है। ताल वाद्यों की जब आवश्यकता उत्पन्न होती है तो वाद्यों की उत्पत्ति होना संभव है ताल वाद्यों का सम्बन्ध हमारे देवी–देवताओं से हैं। जैसे डमरू, मृदंग इत्यादि। हिमाचल प्रदेश में संगीत के हर क्षेत्र में शोध हो चुके हैं। लोक संगीत, लोक गायन शैलियों पर बहुत शोध हो चुके हैं। वर्तमान में अनेक विषयो पर शोध प्रगतिशील है परन्तु संगीत का एक पक्ष ऐसा है जो शोध से अछूता था। वह पक्ष था अवनद्ध वाद्य। हिमाचल के लोक–ताल वाद्य जिन पर शोध किए जा सकते है। जैसे प्राचीन लोक–ताल, लयकारियां, वादक कलाकार इस प्रकार के बहुत विषय हैं ताल वाद्यों के महत्व पर प्रकाश डालना शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य है। ताल वाद्यों का हर पक्ष महत्वपूर्ण है जो जानना आवश्यक है। हिमाचल प्रदेश में अनेक प्रकार के ताल वाद्य प्रचलित है और समाज में इन वाद्यों का अत्याधिक महत्व है।

निष्कर्ष

संगीत का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में हर मनुष्य से होता है। यह मनुष्य की रूचि पर निर्भर करता कि वह किस प्रकार का संगीत श्रवण करे और आनन्द को महसूस करे। देव–भूमि हिमाचल में प्राचीन काल से लेकर मानव ताल वाद्यों का प्रयोग करता आ रहा है। शनैः–शनै ताल वाद्यों का विकास होता आ रहा है। ताल वाद्यों के प्रकार आज देखने को प्राप्त होते हैं। देव–भूमि में लोक–ताल वाद्यों के कलाकारों द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया जाता है और कुछ ऐसे भी लोग हैं जो ताल वाद्यों का निर्माण करते है इन लोगों का भी संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। इन्ही के द्वारा हम ताल वाद्यों का निर्मित रूप देखते हैं। वर्तमान में लोक–ताल वाद्यों का इतना महत्व है कि हिमाचली संगीत के साथ ताल वाद्यों द्वारा संगत की जाती है। आज हिमाचल प्रदेश में ताल वाद्यों (अवनद्ध वाद्यों) की स्वतन्त्र पहचान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

गुप्ता, चित्रा. (1992). संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिता, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
शर्मा, महेन्द्र. (2008). अनबद्ध वाद्य सिद्धांत एवं वादन परम्परा. अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़ प्रथम संस्करण।